International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजस्थान में अनुसू चत जाति में सामाजिक गतिशीलता : जालोर जिले के मेघवाल समुदाय का अध्ययन

मोहनलाल गेहलोत (शोधार्थी)
डॉ. संजय गल (शोध निर्देशक)
गो वंद गुरु जनजातीय वश्व वधालय, बांसवाड़ा

सार

यह तथ्य निश्चित रूप से ध्यान दिये जाने योग्य है क उस दौर में व्यवसाय परिवर्तन की प्रवृत्ति बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही थी। पूर्व व र्णत आंकड़ों से इस बात की संपुष्टि भी होती है। कृ ष कार्य में वैश्य जातीय लोग राजपूतों की तुलना में अपेक्षया अ धक थे। गूजर तथा रैबारी जातियां जो पारंपरिक रूप से चरवाहे का कार्य करती आ रही थी भी अब कृ ष की ओर झुकती हुई दृष्टिगत हो रही थी। सन् 1921 में इनमें से अ धकतर ने कृ ष कार्य और खेतों में मजदूरी के कार्य को अपना लया था। इसके अतिरिक्त राजपूताना की निम्नवर्गीय जातियां उच्च नौकरियों तथा व्यवसायों की ओर भी झुक रही थी। यद् प यह संख्या पूरी जाति ने अनुपात में काफी कम या नाममात्र की ही थी, परंतु समसामयिक सामाजिक में आने वाले परिवर्तन समसामयिक आ र्थक तथा व्यवसायिक जीवन गतिशीलता को समझने के लए पर्याप्त थी। इस परिप्रेक्ष्य में इस सामाजिक गतिशीलता का अपना एक स्वतंत्र महत्व था। इस बदलते हुए सामाजिक परिदृश्य में जहां एक जाति वशेष के लोगों के द्वारा अन्य जाति के लोगों के द्वारा कये जाने वाले कार्यों को अपनाना शुरू कर दिया तब उन्होंने उसी जाति के सामाजिक अ धकार व प्रतिष्ठा प्राप्ति की अपेक्षा भी करनी शुरु कर दी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उदाहरण के रूप में इस तथ्य को उद्धृत कया जा सकता है क, बीकानेर का व्यापारी वर्ग सामंतों को प्राप्त सु वधाओं तथा वशेषा धकारों को प्राप्त करने की होड़ करने लगा था, जिसे एक बड़े परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज कई खांचों में वभाजित है। इसी में एक अहम वभाजक रेखा जाति भी है। जाति का सीधा अर्थ समूह, वशेषता या गुण होता है। इसी अर्थ में फूल, पशु, पक्षी, अनाज, फल तथा सब्जी आदि की जाति जानी और पहचानी जाती है। जाति एक तरह की भेदक वशेषता का बोधक है। हालां क जाति यानी समूह की सीमा भी टूटती है जब कभी उसमें बदलाव लाया जाता है। जैसे आम की कलम भी होती है और 'कलमी आम' भी मलते हैं। स्वाद की दृष्टि से उनमें नई वशेषता आ जाती है। ऐसे ही सामाजिक जीवन में भी एक स्तर पर भेद करना स्वाभा वक रूप से मलता है और वश्व में हर जगह सामाजिक श्रे णयां पाई जाती हैं। जब हम भारत की सामाजिक दुनिया में प्रवेश करते हैं तो यहां हमारे समक्ष जाति एक जटिल और गतिशील सामाजिक सत्य के रूप में उपस्थित दिखती है जिसके अब तक संवैधानिक और रूढ़िगत कई-कई पाठ और संस्करण कए जा चुके हैं।

राजस्थान में अनुसू चत जाति में सामाजिक गतिशीलता

मेघवाल' मारवाड़, राजस्थान से हैं। 1981 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में मेघ, मेघवाल, मेंघवार के रूप में अ धसू चत लोगों की संयुक्त जनसंख्या 889,300 थी। वे पश्चिमी गुजरात में (पा कस्तान सीमा के पास) और भारत के अन्य भागों जैसे महाराष्ट्र, पंजाब और हरियाणा में रहते हैं। 'मेघ' जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश से हैं और उन्हें मेघ, आर्य मेघ और भगत के नाम से जाना जाता है। कुछ स्थानों पर वे गणे शया, मेघवंशी,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महाग, राखेसर, रा खया, रि खया, सहमार, रि षया और अन्य नामों से भी जाने जाते हैं। कुछ महाशा भी यह दावा करते हैं क वे मेघों से संबं धत हैं। सन् 1947 में भारत के वभाजन के बाद मेघ, जो हिंदू धर्म में धर्मान्तरित हो गए थे, वे भारतीय क्षेत्र में पलायन कर गए।उनमें से अ धकांश सयालकोट से आ कर पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में उनके लए स्था पत श वरों में आ बसे। पा कस्तान में शब्द मेघवाल के स्थान पर मेघवार प्रयोग कया जाता है। सन् 1991 में पंजाब (भारत) में मेघों की जनसंख्या 105157 होने का अनुमान था। सन् 2000 में पा कस्तान में लगभग 226600 मेघवार रहते थे जो मुख्यतः उत्तर-पूर्व पंजाब के दादू और नवाबशाह शहरों में और संध में अ धकतर बदीन, मीरपुर खास, थारपरकर और उमेरकोट जिलों में बसे थे। मेघवं शयों का पेशा कृ ष और बुनाई था। वे वर्ष में दो फसलें लेते थे। शेष समय वे अन्य संबंद्ध गति व धयों में व्यस्त रहते थे। राजस्थान के देहाती इलाके में अभी भी इस समुदाय के कई लोग अभी भी छोटी बस्तियों में रहते हैं। उनके आवास गारे की ईंट से बनी गोलाकार झोप डयाँ हैं जिन पर रंगीन ज्या मतीय डजाइन चत्रित होते हैं और जिन्हें वस्तृत जड़ाऊ दर्पण कार्य से सजाया गया होता है। बीते समय में मेघवाल समुदाय का मुख्य व्यवसाय कृ षश्रम था, बुनाई, वशेष रूप से खादी और काष्ठकार्य था और ये अभी भी उनके मुख्य व्यवसायों में हैं। महिलाएँ अपने कढ़ाई के काम के लए प्र सद्ध हैं और ऊन तथा सूती कपड़े की बढ़िया बुनकर हैं।

मेघवं शयों में से कुछ राजस्थान के गाँवों से मुंबई जैसे बड़े शहरों चले गए हैं। सन् 1936 में बी.एच मेहता, शोधकर्ता ने एक अध्ययन में कहा क गाँव के मनहूस जीवन से बचने के लए उनमें से अ धकतर शहरों में गए और महसूस कया क शहर में भीड़ और अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों के बावजूद उनके जीवन में सुधार हुआ है। आज मेघवालों में श क्षतों की संख्या

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बढ़ी है और सरकारी नौकरियाँ प्राप्त कर रहे हैं। पंजाब में वशेषकर अमृतसर, जालंधर और लु धयाना जैसे शहरों में वे खेल, हौज़री, शल्य- च कत्सा उपकरणों और धातुओं से वस्तुओं का उत्पादन करने वाले कारखानों में मज़दूरी कर रहे हैं। उनमें से कुछ का अपना स्वयं का व्यवसाय या लघु उद्योग है। जीवन यापन के लए छोटा व्यापार और सेवा इकाइयाँ उनका प्रमुख सहारा है।जम्मू-कश्मीर में भू म सुधारों के सफल कार्यान्वयन के बाद उनमें से कई छोटे कसान बन गए। पा कस्तान से भारत में आने के बाद मेघों को भी अलवर (राजस्थान) में बंजर भू म में दी गई। बाबू गोपी चंद ने उन्हें इस प्र क्रया में बहुत सहायता की। यह अब उपजाऊ भू म है।

उनके प्रधान भोजन में चावल, गेहूं और मक्का शा मल है और दालों में मूंग, उड़द और चना. वे शाकाहारी नहीं हैं। जम्मू में एक मेघ धा र्मक नेता भगता साध (केरन वाले) के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा मेघ समूह शाकाहारी बना।

पारंपरिक मेघवाल समाज में महिलाओं का दर्जा कमतर है। परिवारों के बीच बातचीत के माध्यम से यौवन से पहले ही ववाह तय कर दिए जाते हैं। शादी के बाद पत्नी पति के घर में आ जाती है। प्रसव के समय वह मायके में जाती है। पता द्वारा बच्चों का उत्तर दायित्व लेने और पत्नी को मुआवजा देने के बाद तलाक की अनुमति देने की परंपरा है। कसी बात के लए नापसन्द व्यक्ति का हुक्का-पानी बंद करने की एक सामाजिक बुराई मेघों में है। इसे तुच्छ मामलों में भी इस्तेमाल कया जाता है। इससे मेघ महिलाओं के लए सामाजिक कठिनाइयाँ बढ़ी हैं।

मेघवालों के प्रारम्भिक इतिहास या उनके धर्म के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। संकेत मलते हैं क मेघ शव और नाग (ड्रैगन के उपासक थे). मेघवाल राजा बली को भगवान के रूप में मानते हैं और उनकी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वापसी के लए प्रार्थना करते हैं।कई सदियों से केरल में यही प्रार्थना ओणम त्योहार का वृहद् रूप धारण कर चुकी है। वे एक नास्तिक और समतावादी ऋ ष चार्वाक के भी मानने वाले थे। आर्य चार्वाक के वरोधी थे। दबाव जारी रहा और चार्वाक धर्म का पूरा साहित्य जला दिया गया। इस बात का प्रमाण मलता है क 13वीं शताब्दी में कई मेघवाल इस्लाम की शया निज़ारी शाखा के अनुयायी बन गए और क निज़ारी वश्वास के संकेत उनके अनुष्ठानों और मथकों में मलते हैं। अ धकांश मेगवाल हिंदू है, हालां क कुछ इस्लाम या ईसाई धर्म जैसे अन्य धर्मों के भी अनुयायी हैं।

मध्यकालीन हिंदू पुनर्जागरण, जिसे भक्ति काल भी कहा जाता है, के दौरान राजस्थान के एक मेघवाल कर्ता राम महाराज, मेघवालों के आध्यात्मिक गुरु बने। कहा जाता है क 19 वीं सदी के दौरान मेघ आम तौर पर कबीरपंथी थे जो संतमत के संस्थापक संत सत्गुरु कबीर (1488 - 1512 ई.) के अनुयायी थे। आज कई मेघवाल संतमत के अनुयायी हैं जो कच्चे रूप से जुड़े धा र्मक नेताओं का समूह है और जिनकी शक्षाओं की वशेषता एक आंतरिक, एक दिव्य सद्धांत के प्रति प्रेम भक्ति और समतावाद है, जो हिंदू जाति व्यवस्था पर आधारित गुणात्मक भेद और हिंदू तथा मुसलमानों के बीच गुणात्मक भेद के वरुद्ध है। वर्ष 1910 तक, स्यालकोट के लगभग 36000 मेघ आर्य समाजी बन गए थे परन्तु चंगुल को पहचानने के बाद सन् 1925 में वे 'आद धर्म सोसाइटी' में शा मल हो गए जो ऋ ष र वदास, कबीर और नामदेव को अपना आराध्य मानती थी। भारत के एक सुधारवादी फकीर और राधास्वामी मत के एक गुरु बाबा फकीर चंद ने अपनी जगह सत्गुरू के रूप में काम करने के लए भगत मुंशी राम को मनोनीत कया जो मेघ समुदाय से थे।

राजस्थान में इनके मुख्य आराध्य बाबा रामदेवजी हैं जिनकी वेदवापूनम (अगस्त - सतम्बर) के दौरान पूजा की जाती है। मेघवाल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धा र्मक नेता गोकुलदास ने अपनी वर्ष 1982 की पुस्तक 'मेघवाल इतिहास', जो मेघवालों के लए सम्मान और उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार का प्रयास है और जो मेघवाल समुदाय के इतिहास का पुनर्निर्माण करती है, में दावा कया है क स्वामी रामदेव स्वयं मेघवाल थे। गाँव के मन्दिरों में चामुंडा माता की प्रतिदिन पूजा की जाती है। ववाह के अवसर पर बंकरमाता को पूजा जाता है। डालीबाई एक मेघवाल देवी है जिसकी पूजा रामदेव के साथ-साथ की जाती है। भारत के जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हिमाचल, हरियाणा राज्यों में पूर्वजपूजा (एक प्रकार का श्राद्ध) की जाती है। जम्मू-कश्मीर में डेरे-डेरियों पर पूर्वजों की वा र्षक पूजा प्रच लत है। कुछ मेघवार पीर पथोरो की पूजा करते हैं जिसका मन्दिर मीरपुर खास के पास पथोरो गाँव में है। केरन के बाबा भगता साध मेघों के धा र्मक नेता और आराध्य पुरुष थे जिन्होंने जम्मू-कश्मीर में मेघ समुदाय के आध्यात्मिक कल्याण के लए कार्य कया। बाबा मनमोहन दास ने बाबा भगता साध के उत्तरा धकारी बाबा जगदीश जी महाराज के निधन के बाद गुरु का स्थान ले लया।

संदर्भ सूची

- बेदी, रघुवंश देव - सहकारिता के सद्धान्त इतिहास एवं व्यवहार , इंटरनेशनल पब्लि शंग हाउस, 1981.
- भटनागर, के.पी. हजेला, टी.एन. निगम - सहकारिता देश और वदेश में, कशोर पब्लिकेशन हाउस, कानपुर, 1964.
- भटनागर, नंदलाल - सहकारिता के सद्धान्त एवं भारतीय सहकारिता , रस्तोगी एंड क., मेरठ, 1959.
- दुबेशी , पी.आर. - प्रन्सिपल एंड फलोसपी ऑफ कापरेशन , बेकुंठ मेहता नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ कोपरेशन मेनेजमेंट, पुना, 1970.